षट्खंडागम पुस्तक-७ (फोल्डर नं. ००१४०१)

मुख्य टाइटल

विषयसूची

प्राक्कथन ---------- १

Introduction ---------- i-ii

क्या षट्खंडागम जीवट्ठामकी सत्प्ररूपणाके सूत्र ९३ में संयत पद अपेक्षित है... ---------- १

मूडबिद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंमें जीवट्ठाणकी... ---------- ३

विषय-परिचय ---------- ४

क्षुद्रकबन्धकी विषय-सूची ---------- ९

शुद्धिपत्र ---------- १७

मूल, अनुवाद और टिप्पण क्षुद्रकबन्ध ---------- १-५९४

बन्धक-सत्त्वप्ररूपणा ---------- १

धवलाकारका मंगलाचरण ---------- १

बन्धकोंका निर्देश ---------- १

गतिमार्गणानुसार बन्धक और अबन्धकोंकी प्ररूपणा ---------- ७

बन्धकारणोंका निर्देश ---------- ९

इन्द्रियमार्गणानुसार बन्धक-अबन्धकोंका प्ररूपण ---------- १५

कायमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- १६

योगमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- १७

वेदमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- १८

कषायमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- १९

ज्ञान व संयम मार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- २०

दर्शन व लेश्या मार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- २१

भव्य व सम्यक्त्व मार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- २२

संज्ञिमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- २३

आहारमार्गणानुसार बन्धक प्ररूपणा ---------- २४

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व ---------- २५

बन्धकोंकी प्ररूपणामें ग्यारह अनुयोगद्वारोंका निर्देश ---------- २५

ग्यारह अनुयोगद्वारोंका क्रम ---------- २६

गतिमार्गणानुसार नैगमादिक नयोंकी अपेक्षा नारकप्ररूपणा ---------- २८

तिर्यंच, मनुष्य व देवगतिमें स्वामित्वप्ररूपण ---------- ३१

नारकियोंके पांच उदयस्थानोंका निरूपण ---------- ३२

तिर्यंचोंमें नौ उदयस्थानोंका निरूपण ---------- ३५

उदयस्थानभंगोंकी संख्यादिकके जाननेका उपाय ---------- ४४

मनुष्योंमें ग्यारह उदयस्थानोंका निरूपण ---------- ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवोंमें पांच उदयस्थानोंका निरूपण ---------- ५८
इन्द्रियमार्गणानुसार स्वामित्वप्ररूपण---------- ६१
इन्द्रिय शब्दका निरुक्त्यर्थ---------- ६१
एकेन्द्रिय भावमें क्षायोपसमिकत्व...---------- ६१
द्वीन्द्रियादि भावोंमें क्षायोपशमिकता---------- ६४
एकेन्द्रियादि भावोंमें औदयिके भावकी आशंका ---------- ६७
अनिन्द्रियत्वमें क्षायिक भाव... ---------- ६८
कायमार्गणानुसार स्वामित्व प्ररूपणा---------- ७०
योगमार्गणानुसार स्वामित्व...---------- ७४
वेदमार्गणानुसार स्वामित्व प्ररूपणा---------- ७८
स्त्रीवेद क्या स्त्रीवेद द्रव्य कर्मजनित...---------- ७९
कषायमार्गणानुसार स्वामित्व ---------- ८२
ज्ञानमार्गणानुसार स्वामित्व---------- ८४
संयममार्गणानुसार स्वामित्व---------- ९१
दर्शनमार्गणानसार स्वामित्व...---------- ९६
लेश्यामार्गणानुसार स्वामित्व---------- १०४
भव्यमार्गणानुसार स्वामित्व---------- १०६
सम्यक्त्वमार्गणानुसार स्वामित्व प्ररूपणा ---------- १०७
संज्ञिमार्गणानुसार स्वामित्व---------- १११
आहारमार्गणानुसार स्वामित्व ---------- ११२
एक जीवकी अपेक्षा काल ---------- ११४
गतिमार्गणानुसार नारकियोंकी कालप्ररूपणा ---------- ११४
तिर्यंचोंकी कालप्ररूपणा ---------- १२१
मनुष्योंकी कालप्ररूपणा---------- १२५
देवोंकी कालप्ररूपणा---------- १२७
इन्द्रियमार्गणानुसार एकेन्द्रिय जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १३५
विकलेन्द्रियोंकी कालप्ररूपणा---------- १४१
पंचेन्द्रियोंकी कालप्ररूपणा ---------- १४२
पृथिवीकायिकादिक जीवोंकी कालप्ररूपणा---------- १४३
सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे सूक्ष्म... ---------- १४७
त्रसकायिकोंकी कालप्ररूपणा---------- १४९
मनोयोगी व वचनयोगी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १५१
काययोगी जीवोंकी काल प्ररूपणा---------- १५२
स्त्रीवेदी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १५६
पुरुषवेदी... ---------- १५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकवेदी... ---------- १५८
अपगतवेदी... ---------- १५९
क्रोधादि कषाय युक्त जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १६०
मति-श्रुत अज्ञानी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १६१
विभंगज्ञानियोंका काल ---------- १६३
मति-श्रुतज्ञानियोंका काल ---------- १६४
मनःपर्ययज्ञानी और केवलज्ञानी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १६५
परिहारशुद्धिसंयत व संयतासंयत जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १६६
सामायिक-छेदोपस्थापना.... ---------- १६८
यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंकी कालप्ररूपणा ---------- १६९
असंयतोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७१
चक्षुदर्शनी जीवोंका काल ---------- १७२
अचक्षुदर्शनी व अवधिदर्शनियोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७३
केवलदर्शनी जीवोंका काल ---------- १७४
कृष्णादिक तीन लेश्यावालोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७४
पीतादिक तीन लेश्यावालोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७५
भव्यसिद्धिक जीवोंकी काल प्ररूपणा ---------- १७६
अभव्यसिद्धिक जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७७
सम्यग्दृष्टि जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १७८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १८१
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १८२
मिथ्यादृष्टि जीवोंकी काल प्ररूपणा ---------- १८३
संज्ञी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १८३
असंज्ञी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १८४
आहारक जीवोंकी कालप्ररूपणा ---------- १८४
अनाहारक जीवोंकी काल प्ररूपणा ---------- १८५
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर ---------- १८७
गतिमार्गणानुसार नारकियोंका अन्तर ---------- १८७
तिर्यंच व मनुष्योंका अन्तर ---------- १८८
देवोंका अन्तर ---------- १९०
एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर ---------- १९८
द्वीन्द्रियादिक जीवोंका अन्तर ---------- २०१
पृथिवीकायिकादिक जीवोंका अन्तर ---------- २०२
त्रसकायिक जीवोंका अन्तर ---------- २०४
पांच मनोयोगी व पांच वचनयोगी जीवोंका अन्तर ---------- २०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायोगियोंकी अन्तरप्ररूपणा ----------२०६
स्त्री-पुरुषवेदियोंका अन्तर----------२१३
नपुंसकवेदियोंका अन्तर ----------२१४
अपगतवेदियोंका अन्तर ----------२१५
क्रोधादिकषाय युक्त जीवोंका अन्तर ----------२१६
अकषायी जीवोंका अन्तर----------२१७
मतिश्रुत अज्ञानी जीवोंका अन्तर----------२१७
विभंगज्ञानी जीवोंका अन्तर----------२१८
मतिज्ञानी आदि चार सम्यग्ज्ञानियोंका अन्तर----------२१९
केवलज्ञानियोंका अन्तर----------२२१
संयत जीवोंका अन्तर ----------२२१
असंत जीवोंका अन्तर ----------२२५
चक्षुदर्शनी जीवोंका अन्तर ----------२२६
अचक्षुदर्शनी व अवधिदर्शनियेंका अन्तर----------२२७
केवलदर्शनियोंका अन्तर----------२२८
कृष्णादिक तीन लेश्या युक्त जीवोंका अन्तर ----------२२८
पीतादिक तीन लेश्यायुक्त जीवोंकी अन्तरप्ररूपणा----------२२९
भव्य व अभव्य जीवोंका अन्तर----------२३०
सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर----------२३१
सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी अन्तरप्ररूपणा ----------२३२
मिथ्यादृष्टियोंकी अन्तरप्ररूपणा ----------२३४
संज्ञी जीवोंकी अन्तरप्ररूपणा----------२३४
असंज्ञी जीवोंकी अन्तरप्ररूपणा ----------२३५
आहारक-अनाहाक जीवोंकी अन्तरप्ररूपणा ----------२३६
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ----------२३७
गतिमार्गणामें अस्ति-नास्ति भंगोंका निरूपण----------२३७
इन्द्रिय व कायमार्गणामें अस्ति-नास्ति... ----------२३९
योग, वेद व कषाय मार्गणामें...----------२४०
ज्ञान व संयम मार्गणामें...----------२४१
दर्शन, लेश्या व भव्य मार्गणामें... ----------२४२
सम्यक्त्व, संज्ञी व आहार...----------२४३
द्रव्यप्रमाणानुगम----------२४४
गतिमार्गणानुसार द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षा नारकी जीवोंका प्रमाण ----------२४४
द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षा तिर्यंच जीवोंका प्रमाण----------२५०
मनुष्य व मनुष्य अपर्याप्तोंका प्रमाण ----------२५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंका प्रमाण----२५७
सामान्य देवोंका प्रमाण----२५९
भवनवासी देवोंका प्रमाण----२६१
वानव्यन्तर देवोंका प्रमाण----२६२
रज्योतिषी देवंका प्रमाण----२६३
सौधर्म-ईशानकल्पवासी...----२६४
सनत्कुमारादि शतार-सहस्रार...----२६५
आनतादि अपराजित विमानवासी...----२६६
सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंका प्रमाण----२६७
एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण----२६७
द्वीन्द्रियादिक जीवोंका प्रमाण----२६९
पृथिवीकायिकादि स्थावर जीवोंका प्रमाण----२७०
त्रसकायिक जीवोंका प्रमाण----२७६
मनोयोगी व वचनयोगी जीवोंका प्रमाण----२७६
काययोगी जीवोंका प्रमाण----२७८
स्त्री –पुरुषवेदी...----२८१
नपुंसकवेदी...----२८२
अपगतवेदी...----२८३
क्रोषादिकषायी...----२८४
अकषायी...----२८५
मति-श्रुत-अज्ञानी...----२८५
विभंगज्ञानी...----२८६
मति, श्रुत व अवधिज्ञानी...----२८६
मनःपर्यय व केवलज्ञानी...----२८७
संयत ...---- २८८
असंयत...---- २८९
चक्षुदर्शनी...----२९०
अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी...----२९१
केवलदर्शनी ...----२९२
कृ-ष्णादिक चार लेश्यावेल...----२९२
पद्म व शुक्ल लेश्यावाले...----२९३
भव्यसिद्धिक जीवोंका प्रमाण----२९४
अभव्यसिद्धिक...----२९५
सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि....----२९६
मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाम----२९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञी और असंज्ञी... ----२९७
आहारक व अनाहारक...----२९८
क्षेत्रानुगम----२९९
स्वस्थान समुद्घात व उपपादके भेद औऱ उनके लक्षण ----२९९
नारकियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा... ----३०१
उपपादक्षेत्रके निकालनेका विधान----३०३
पांच प्रकारके तिर्यंचोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ----३०५
मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और... ----३०८
मनु,य अपर्याप्तोंका क्षेत्र----३११
मारणान्तिक क्षेत्रके निकालनेका विधान----३१२
सामान्य देवोंका क्षेत्रप्रमाण----३१३
भवनवासी आदि सर्वार्थसिद्धि... ----३१६
भवनवासी आदि देवोंका शरीरोत्सेध----३१९
सामान्य एकेन्द्रिय व सूक्ष्म एकेन्द्रिय... ----३२०
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त व... ----३२२
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय... ----३२४
पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३२६
पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ----३२८
पृथिवीकायिकादिक व सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक... ----३२९
बादर पृथिवीकायिकादिक आठ वर्गोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३३०
आठ पृथिवियोंका जगप्रतर प्रमाण ----३३१
पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकादिकोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ----३३४
बादर वायुकायिक व उनके अपर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३३५
बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३३६
वनस्पतिकायिक व निगोद जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३३७
बादर वनस्पतिकायिक व बादर निगोद जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३३८
त्रसकायिक जीवोंकी क्षेत्र----३३९
पांचों मनोयोगी और पांचो वचनयोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३४०
काययोगी और औदारिक...----३४१
औदारिककाययोगियोंका क्षेत्र ----३४२
वैक्रियिककाययियोंका क्षेत्र----३४३
वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ----३४४
आहारककायोगियोंका क्षेत्र ----३४५
आहारमिश्रकाययोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा----३४६
कार्मणकाययोगियोंका क्षेत्र----३४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३४७
नपुंसकवेदी और अपगतवेदियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ---------- ३४८
क्रोधादि चारों कषाययुक्त जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५०
मति-श्रुत अज्ञानी जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५०
विभंगज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५१
मति-श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५२
केवलज्ञानी जीवोंका क्षेत्र---------- ३५२
संयत जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५४
असंयत जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा---------- ३५५
चक्षुदर्शनी जीवोंका क्षेत्र---------- ३५५
अचक्षुदर्शनी जीवोंकी क्षेत्र प्ररूपणा ---------- ३५६
अवधिदर्शनी व केवलदर्शनी जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा ---------- ३५७
कृष्णादिक पांच लेश्यावाले...---------- ३५७
शुक्ललेश्यावाले...---------- ३५९
भव्य व अभव्य...---------- ३६०
सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि... ---------- ३६१
वेदक सम्यग्दृष्टि, उपशम सम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ३६२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवंकी... ---------- ३६३
मिथ्यादृष्टि...---------- ३६४
संज्ञी जीवंकी.... ---------- ३६४
असंज्ञी... ---------- ३६५
आहारक.. ---------- ३६५
अनाहारक... ---------- ३६६
स्पर्शनानुगम ---------- ३६६
सामान्य नारकियोंकी स्पर्शन प्ररूपणा ---------- ३६७
झालर समान तिर्यग्लोककी मान्यताका खण्डन ---------- ३७१
द्वितीयादि पृथिवियोंके नारकियोंकी स्पर्शनप्ररूपणा---------- ३७३
सामान्य तिर्यंचोंकी... ---------- ३७४
शेष चार प्रकारके तिर्यंचोंकी... ---------- ३७६
मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंकी... ---------- ३७९
मनुष्य अपर्याप्तोंकी... ---------- ३८२
सामान्य देवोंका स्पर्शन ---------- ३८२
भवनत्रिक देवोंकी... ---------- ३८५
सौधर्म और ईशान कल्पवासी... ---------- ३८८
सनत्कुमारादि सहस्रार कल्पवासी देवोंकी...---------- ३८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनतादि चार कल्पवासी देवोंकी.... ----३९०
कल्पातीत देवोंका स्पर्शन ----३९२
एकेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन----३९२
विकलेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन----३९४
पंचेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन ----३९६
पृथिवीकायिकादि जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा----४००
तेजस्कायिक जीव कहां पाये जाते हैं इस पर मतभेद ----४०१
त्रसकायिक जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा...----४११
पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी... ----४११
काययोगी और दारिकमिश्रकाययोगी... ----४१३
औदारिककाययोगी जीवोंकी.... ----४१४
वैक्रियिककाययोगी...----४१५
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी ----४१७
आहारककाययोगी...----४१८
आहारमिश्रकाययोगी जीवोंकी... ----४१९
कार्मणकाययोगी... ----४१९
स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी... ----४२०
नपुंसकवेदी और अपगतवेदी...----४२३
क्रोधादि चार कषायवाले...---- ४२५
मति-श्रुत अज्ञानी... ----४२५
विभंगज्ञानी जीवोंकी...----४२६
मति, श्रुत और अवधिज्ञानी...----४२८
मनःपर्ययज्ञानी जीवोंकी स्पर्शन-प्ररूपणा----४३०
केवलज्ञानी जीवोंकी स्पर्शन-प्ररूपणा ----४३१
संयत, यथाख्यातविहारशुद्धि... ----४३१
संयतासंयत जीवोंका स्पर्शन ----४३२
असंयत जीवोंका स्पर्शन----४३४
चक्षुदर्शनी जीवोंका स्पर्शन ----४३४
अचक्षुदर्शनी.... ----४३७
अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी... ----४३८
कृष्णादिक चार लेश्यावाले ----४३८
पद्मलेश्यावाले जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा----४४१
शुक्ललेश्यावाले जीवोंका स्पर्शन ----४४२
भव्य और अभव्य जीवोंका स्पर्शन----४४४
सम्यग्दृष्टि..... ----४४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षायिकसम्यग्दृष्टि.... ---- ४४९
वेदकसम्यग्दृष्टि.... ---- ४५१
उपशमसम्यग्दृष्टि.... ---- ४५३
सासादनसम्यग्दृष्टि.... ---- ४५५
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शन ---- ४५७
मिथ्यादृष्टि.... ---- ४५८
संज्ञी.... ---- ४५८
असंज्ञी.... ---- ४६१
आहारक व अनाहारक जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा ---- ४६१
नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम ---- ४६२
नारकी जीवोंकी कालप्ररूपणा ---- ४६२
तिर्यंच और मनुष्योंकी... ---- ४६३
देवोंकी कालप्ररूपणा ---- ४६४
एकेन्द्रियादि पांच प्रकारके... ---- ४६६
त्रसकाय और स्थावरकाय जीवोंकी... ---- ४६७
योगमार्गणामें कालप्ररूपणा ---- ४६८
वेदमार्गणामें.... ---- ४७१
कषाय और ज्ञानमार्गणामें कालप्ररूपणा ---- ४७२
संयम मार्गणामें कालप्ररूपणामें... ---- ४७३
दर्शन व लेश्या मार्गणामें कालप्ररूपणा ---- ४७४
भव्य और सम्यक्त्व मार्गणामें कालप्ररूपणा... ---- ४७५
संज्ञी और आहार मार्गणामें.... ---- ४७६
नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम ---- ४७८
गतिमार्गणामें नारकी जीवोंकी अन्तरप्ररूपणा ---- ४७८
तिर्यंच व मनुष्योंकी अन्तर प्ररूपणा ---- ४८०
देवोंकी अन्तरप्ररूपणा ---- ४८१
इन्द्रिय मार्गणामें अन्तरप्ररूपणा ---- ४८२
काय.... ---- ४८३
योग...... ---- ४८४
वेद...... ---- ४८४
कषाय और ज्ञान मार्गणामें.... ---- ४८७
संयम मार्गणामें अन्तरप्ररूपणा ---- ४८८
दर्शन मार्गणामें.... ---- ४९०
लेश्या और भव्य मार्गणामें.... ---- ४९०
सम्यक्त्व मार्गणामें अन्तरप्ररूपणा ---- ४९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञी मार्गमामें अन्तरप्ररूपणा ----४९३
आहार मार्गणामें अन्तरप्ररूपणा----४९४
भागाभागानुगम ----४९५
नरकगतिमें भागाभागप्ररूपणा----४९५
तिर्यंच गतिमें.... ----४९६
मनुष्यगतिमें.... ----४९७
देवगतिमें.... ----४९८
एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय...----४९९
सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें....----५००
द्वीन्द्रियादिक जीवोंमें... ----५०१
कायमार्गणामें..... ----५०२
सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे सूक्ष्म.....----५०४
योगमार्गणामें भागाभाग....----५०७
वेदमार्गणामें.... ----५०९
कषायमार्गणामें....----५१०
ज्ञान मार्गणामें....----५११
संयम मार्गणामें....----५१२
दर्शनमार्गणामें....----५१३
लेश्यामार्गणामें.... ----५१४
भव्यमार्गणामें...----५१५
सम्यक्त्वमार्गणामें....----५१६
संज्ञीमार्गणामें... ----५१७
आहार मार्गणामें... ----५१८
अल्पबहुत्वानुगम
गति मार्गणामें अल्पबहुत्वप्ररूपणा ----५२०
इन्द्रिय मार्गणामें अल्पबहुत्वप्ररूपणा----५२४
इन्द्रियमार्गणामें प्रारान्तरसे अल्पबहुत्वप्ररूपणा ----५२६
कायमार्गणामें.....----५३०
कायमार्गणामें अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्वप्ररूपणा----५३२
कायमार्गणामें एक और अन्य प्रकारसे.... ----४३३
वनस्पतिकायिकोंसे निगोद जीवोंकी पृथक्त्वप्ररूपणा ----५३९
काय मार्गणामें चुतर्थ प्रकारसे....----५४२
योग मार्गणामें अल्पबहुत्वप्ररूपणा----५५०
वेद मार्गणामें अल्पबहुत्वप्ररूपणा----५५४
वेदमार्गणामें अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्व----५५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कषायमार्गणामें अल्पबहुत्व----------५५८
ज्ञान मार्गणामें अल्पबहुत्व----------५५९
संयम मार्गणामें अल्पबहुत्व----------५६१
संयम मार्गणामें अन्य प्रकारसे....----------५६२
चारित्रलब्धि स्थानोंमें अल्पबहुत्व.... ----------५६३
दर्शनमार्गणामें....----------५६८
लेश्यामार्गणामें.... ----------५६९
भव्यमार्गणामें.... ----------५७१
सम्यक्त्व.मार्गणामें.... ----------५७१
सम्यक्त्व मार्गणामें अन्य प्रकारसे... ----------५७२
संज्ञी मार्गणामें अल्पबहुत्व.... ----------५७३
आहार मार्गणामें अल्पबहुत्व....----------५७४
महादण्डक और उसके कहनेका प्रयोजन ----------५७५
मार्गणा निरपेक्ष अल्पबहुत्व प्ररूपणा----------५७६
परिशिष्ट
क्षुद्रकबन्ध-सूत्रपाठ ----------१
अवतरण गाथा-सूची ---------- ५०
न्यायोक्तियां---------- ५१
ग्रंथोल्लेख---------- ५२
पारिभाषिक शब्दसूची---------- ५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org